मोरंगे

मार्च – अप्रेल 2024

सम्पादन : प्रभात
डिज़ाइन : खुशी
आवरण फोटो – माँडना मदन मीणा के सौजन्य से
वितरण : लोकेश राठौर
वर्ष 15 अंक 165–166

'मोरंगे' का प्रकाशन 'यात्रा फाउण्डेशन' आस्ट्रेलिया, के वित्तीय सहयोग से हो रहा है।

yatra foundation

प्रबंधन
विष्णु गोपाल,
निदेशक
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
एच–1ए, फर्स्ट फ्लोर, राजनगर,
मानटाउन, सवाईमाधोपुर
राजस्थान
322001

मनीषा बैरवा, फेलो, फरिया।

रामकेश नायक, कक्षा 4, उदय सामुदायिक पाठशाला, फरिया।

इस बार

खिड़की
घर से दूर

गीत-कविताएँ
हैप्पी गर्मी
मेरे गाँव में
तोता
अच्छा लगता है
गिलाउड़ी
चूँ चूँ पूँ पूँ

कहानियाँ
मेट्रो का टिकिट
चूहे
लड़ाई
लड़की की पढ़ाई

याद की धूप-छाँव में
पहले हम यहाँ रहते थे
प्लेट फार्म पर

शिक्षा के ग्रामीण केन्द्र की ओर
कछुआ

बात लै चीत लै
डोला पोला की बात
म्हारी मम्मी

बतरस
कटोरी को पत्र
चप्पल को पत्र

गतिविधि, पहेलियाँ और हीहीठीठी

खिड़की

घर से दूर

मैं राजस्थान के अपने घर से तेरह सौ किलोमीटर दूर हैदराबाद में रहती हूँ। बीटेक करने के बाद आईटी सेक्टर की एक कम्पनी में बतौर प्रोग्राम ऑफिसर यहाँ काम कर रही हूँ। इससे लगता तो ऐसा है कि मैं अब बड़ी हो गई हूँ। जिम्मेदार पद पर हूँ। ऐसा है भी। पर ऐसा भी है कि पहली बार मम्मी–पापा और भाई से इतना दूर रह रही हूँ। मुझे उनकी बहुत याद आती है।

अक्सर बीमार रहने के कारण दवा–दारू और डॉक्टर से मेरा नाता बचपन में ही जुड़ गया था। मम्मी–पापा के साथ रहते कभी चिन्ता नहीं हुई। अब खुद की सारी ही देखभाल खुद ही करनी होती है। कुछ दिनों से कमजोरी महसूस हो रही थी। चक्कर तो नहीं आए पर लगता था कि आ सकते हैं। मम्मी को बताया तो हमेशा की तरह एक ही जवाब आया– ''कल जाकर एक ड्रिप चढवा लेना और उसी में इंजेक्शन लगवा लेना। बढ़िया हो
जाएगी।''

मम्मी को ड्रिप पर बहुत भरोसा है। जब यही बात पापा को बतायी तो बोले, ''ऐसे ड्रिप चढ़वाना ठीक नहीं है। पहले जाकर डॉक्टर से बात करो।''

अगले दिन छुट्टी थी तो मैं ऑन–लाइन हॉस्पिटल तलाशने लगी। मेरी कोशिश थी कि हॉस्पिटल पाँच किलोमीटर के दायरे में ही हो। ताकि आना–जाना आसान रहे। जैसे ही फोन में हॉस्पिटल और डॉक्टर मिले। मैने नंबर लगा दिया।

मैं जाने के लिए तैयार हुई। मुझे तैयार होते देख मेरी रूममेट ने कहा, ''प्रिया मैं साथ चलूँ क्या?'' मुझे लगा इसमें अधिक समय नहीं लगेगा तो फिर क्यों रूममेट को परेशान किया जाए। इसलिए मैने मना करते हुए कहा,''दीदी हॉस्पिटल पास में ही है। मैं चली जाऊँगी। अगर कुछ जरूरत पड़ेगी तो आपको कॉल कर दूँगी।''

मैं ऑटो लेकर हॉस्पिटल पहुँची। नर्स ने वजन और बीपी नापा। इतने में ही मेरा नंबर आ गया। मैने डॉक्टर को बताया, ''मुझे कमजोरी महसूस हो रही है। पिछले कुछ महीनों में वजन भी घट गया। जबकि खाना ठीक ही खाती हूँ।''

डॉक्टर ने पूछा–'इन दिनों क्या खा रही हो? क्या खाने में किसी तरह का बदलाव हुआ है?'

''सुबह नाश्ते में एक केला, एक सेब और भीगे हुए बीज लेती हूँ। लंच में बिरयानी या फ्राइड राईस लेती हूँ। शाम को अनार का ज्यूस और रात में रोटी सब्जी खाती हूँ।'' मैंने बताया।

डॉक्टर बोले–'सब कुछ सामान्य लग रहा है। मैं कुछ जाँचें लिख रहा हूँ। ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि कोई और तकलीफ तो नहीं है। पानी भरपूर पिया करो।'

यह सुनकर मैं सोच रही थी–'जाँचें तो लिखनी ही थी। आम आदमी की नजर में जाँचें ही तो इन्हें झोला छाप डॉक्टरों से अलग करती हैं। जितनी अधिक जाँचें उतना बड़ा डॉक्टर। जितना मँहगा हो, उतना बड़ा अस्पताल।

मैंने पर्ची को देखकर कहा, ''क्या आप मुझे कुछ दवाई और सीरप नहीं लिखेंगे? जिनसे मुझे ताकत मिले और मेरा वजन भी बढ़े?''

डॉक्टर ने कहा–'प्रिया आप पहले से ही बेहतर और संतुलित खाना खा रही हो। इसलिए अलग से कुछ देने की जरूरत नहीं है।'

मैंने जाँचें करवायी और मायूस चेहरा लेकर लिफ्ट से नीचे आने लगी। अब मेरे हाथ में ना दवाई थी और ना जेब में नोट। टेस्ट रिपोर्ट शाम तक मेल पर मिल जाएगी। इसलिए रुकने का फायदा नहीं था। मुझे इतना अंदाजा लग गया था कि रिपोर्ट सामान्य ही आएगी।

नीचे पहुँचकर मैंने पापा को फोन किया और चलते–चलते बताने लगी, ''मेरे पाँच हजार रुपये लगे और डॉक्टर ने एक गोली तक नहीं लिखी। अब ये पैसे पापा आपको ही देने होंगे। क्योंकि डॉक्टर के पास आने के लिए आपने ही कहा था।''

घर जाने के लिए मुझे सड़क पार करनी थी। सड़क के दूसरी तरफ ज्यूस की दुकान भी थी। सोचा अब ज्यूस पीकर ही जाना है। मैंने सड़क के दोनों तरफ देखा और फोन पर बात करते–करते सड़क पार करने लगी। उधर फोन पर पापा कह रहे थे, ''कोई बात नहीं परेशान मत हो, पैसे मैं दे दूँगा।''

कुछ देर के लिए फोन पर मेरा जवाब नहीं मिला तो पापा ने अपनी बात रोक कर इन्तजार किया। पर जब जवाब नहीं आया तो मुझे आवाज दी–'प्रिया? प्रिया?'

रोहित महावर, फेलो, अल्लापुर।

मेरी तरफ से कोई जवाब नहीं गया।
'उठाओ! उठाओ। हॉस्पिटल पहुँचाओ जल्दी।' फोन से अपने आप जा रही इन आवाजों से पापा को चिंता हुई। इसके बाद मुझे कुछ सुनाई नहीं दिया। मुझे कुछ दिखाई नहीं दिया। मैं अचेत थी। उधर जवाब नहीं पाकर पापा ने फोन काट दिया। कुछ सैकिण्ड्स के इन्तजार के बाद पापा का फिर से फोन आया। फोन की घंटी की आवाज मुझे सुनाई पड़ी। कुछ होश आया तो देखा, लोग मुझे उठाकर गाड़ी में डाल रहे थे। मेरा फोन सड़क पर पड़ा था। आवाज सुनकर कार वाले ने मेरा फोन उठाया और मुझे दिया। मेरे फोन उठाते ही पापा बोले, ''बेटा क्या हुआ?''
मैने कराहते हुए कहा, ''पापा एक्सीडेंट हो गया।''
पापा ने अगला सवाल किया, ''आस–पास कोई है? है तो उन्हें फोन दो।''
मैने फोन कार वाले को दे दिया। पापा ने उन्हें बिना देर किये हॉस्पिटल ले जाने की कहकर फोन मुझे देने को कहा। फिर मुझसे बोले, 'तुम अपने दोस्तो को फोन करो और हॉस्पिटल बुलाओ और मेरी बात करवाओ।'
अच्छा हुआ पापा ने फोन किया। अगर नहीं करते तो शायद मेरा फोन वहीं रह जाता। एक्सीडेंट के बाद कुछ समय के लिए मैं बेहोश हो गई थी। जब होश आया तो देखा सड़क पर खून था। मेरा सफेद रंग का टोप आगे–पीछ से लाल हो चुका था। और मैं उसी गाड़ी में थी जिससे मुझे टक्कर लगी थी। पापा को फोन के पीछे से आने वाली आवाजों के कारण सब समझ आ गया था कि कुछ हो गया है।
बगल से आवाज आई–'यहाँ से दो सौ मीटर की दूरी पर एक अच्छा हॉस्पिटल है। वहीं ले चलते हैं।' मेरे सिर से लगातार खून बह रहा था। इस वक्त मेरी चिंता मुझसे ज्यादा कार वाले को थी। उनके साथ उनकी पत्नी भी थी और वे दोनों बेहद डरे हुए थे।
इस दौरान मैंने अपने दोस्तों को फोन कर दिया।
डॉक्टर ने देखते ही कहा, ''टाँके लगेंगे।''
टाँकों की बात सुनकर मुझे बहुत डर लगा। न मम्मी पास में थी न पापा। मैं अंदर से बहुत भावुक हो रही थी। मुझे सबसे ज्यादा चिंता अपने बालों की थी। मुझे महसूस हुआ कोई मेरे बाल काट रहा है। मैंने रोते हुए कहा, 'प्लीज डोंट कट माइ हेयर। मेरे बाल मत काटिए प्लीज!'
'मैं सिर्फ पाँच–छह बाल ही काट रहा हूँ। इसलिए आप शांत रहिए।' डॉक्टर ने बाल दिखाते हुए मुझसे कहा।
मैं रोने लगी–'आप झूठ बोल रहे हैं।'
मैं महसूस कर पा रही थी कि उन्होंने मेरे सारे बाल जड़ से काट डाले हैं।
टाँके लगाते वक्त फिर से पापा का फोन आया और मैं खुद को रोने से नहीं रोक पाई– ''पापा डॉक्टर ने मेरे सारे बाल काट डाले। अब नये बाल नहीं आएँगे।''
पापा ने कहा, ''बेटा जितने भी बाल काटे हैं सारे आ जाएँगे।''

''टाँके वाली जगह की खाल मर जाती है। कभी देखा है मरी खाल पर बाल आते हुए। मम्मी के भी तो नहीं आए थे।'' मैं कह रही थी।

यह सुनकर पापा हँसने लगे और पूछा–'दर्द कैसा है? और कहाँ–कहाँ चोट लगी है? मैं आ रहा हूँ। मैने भी कहा, ''कोहनी, घुटना और टखने पर चोट लगी है। पर बात ये है कि मेरे बाल नहीं आएँगे।''

पापा ने मुझे शांत करते हुए कहा, ''ऐसी बात तो नहीं है। हो सकता है टाँके वाली लाइन पर ना आयें। पर तुम चिंता मत करो। अगर ऐसा हुआ तो हेयर ट्रांसप्लांट करवा लेंगे। पैसे भी मैं दे दूँगा।''

उस दिन पापा से कुछ और भी माँगती तो वो मना नहीं करते।

अब हॉस्पिटल में मेरे दोस्त आ चुके थे। उन्होंने कार वाले से बात की। तब पता चला कि कार की स्पीड़ 60 पर थी और कार के आगे एक ऑटो था और ऑटो के आगे मैं। जैसे ही ऑटो साइड हुआ, कार उन्होंने मुझे देखा। इससे पहले कि वह पूरी तरह से ब्रेक लग पाता ऐक्सीडेंट हो गया था। ब्रेक लगे पर कितना लगते? गाड़ी तेज थी जितना रुक सकती थी रुकी। टकराने से बच सके उतना नहीं रुक सकी।

मेरे दोस्त डॉक्टर से बात कर रहे थे–'आगे क्या करना होगा?'

डॉक्टर ने एमआरआई, सिटी सकैन, दवाईयाँ, इंजेक्शन लिखे। आखिरकार मम्मी वाला इलाज चालू हुआ और मुझे ड्रिप के साथ–साथ इन्जेक्शन दिए गये। जो आज मैं घर से सोचकर निकली थी। पर ये सब ऐसे होगा, ये नहीं सोचा था।

दोस्त अभी भी डरे हुए दिख रहे थे और बार–बार पूछ रहे थे–'सिर में कुछ महसूस हो रहा है क्या? दर्द बहुत ज्यादा हो रहा है?'

एक दोस्त अलग ही राग में था। उसने कहा, ''मेरे बालों में बहुत तेल है। मैं तो नहाने जाने वाला था, जिम में लैग डे होने के कारण पैर भी दर्द कर रहे हैं।''

ये सुनकर थोड़ा गुस्सा आया कि इसके पैर का दर्द मेरे दर्द से तो पक्का कम ही होगा। फिर हँसी भी आई। वो यही चाहता था। ताकि मेरा ध्यान हटे और माहौल कुछ हल्का हो जाए।

रिपोर्ट आ गई। सब रिपोर्ट सामान्य थी। डॉक्टर ने कहा, 'लड़की को थोड़ा आराम करने दो। पूरे समय ये अपने बालों की ही फिक्र करती रहती है। मैं देख रहा हूँ कि ये पूरे समय अपने दर्द को लेकर तो इतना फिक्र में नहीं रही है।'

सुनकर सब हँस रहे थे। सबको हँसते देखकर बड़ी राहत मिल रही थी।

सुबह मुझे जाँच में पाँच हजार डूबने का दुख हो रहा था और अब गाड़ी बीस हजार के पार जा चुकी थी। पर कार वाले अंकल आण्टी ने उस समय तुरंत मदद करके और इलाज की पूरी जिम्मेदारी लेकर बड़ी राहत दी। मैंने भी उन्हें आश्वस्त किया कि हम कोई कार्यवाही नहीं करेंगे। आप निश्चिन्त रहें। और अब आगे का खर्च भी मैं खुद उठा लूँगी।

उनके चेहरे पर राहत के भाव थे। वे अब जाकर थोड़ा मुस्कराए थे। एक पल के लिए लगा मम्मी–पापा हैं। लेकिन वे तो घर पर थे। तेरह सौ किलोमीटर दूर।

प्रिया मीना

गीत कविताएँ

अच्छा लगता है

गाँव से दूर हमारा घर
जंगल के बहुत पास है
मेरी बहन वहाँ बकरियाँ चराती है
जहाँ खूब घास है

मुझे संस्कृत पढ़ना अच्छा लगता है
गणित पढ़ने में गुस्सा आता है
हिन्दी में कवियों का परिचय अच्छा लगता है
स्कूल में मेरी दोस्त आरती और निकीता है
उनके साथ हँसना अच्छा लगता है

लक्ष्मी सांवरिया, 14 वर्ष, कक्षा – 10, उमंग, कुण्डेरा।

तोता

तोता आता उड़ उड़ के
दाना खाता झुक झुक के
खा पीकर जब जाता है
पीपल का पेड़ हिलाता है।

आदर्श गुर्जर, 11 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठयाला, गिरजिपुरा।

मेरे गाँव में

आना मेरे गाँव में
नदी किनारे गाँव है मेरा
बैठ के आना नाव में।

दिनेश गौड़, समूह –लोटस, गिरजिपुरा।

अंजली बैरवा, कक्षा 5, उदय सामुदायिक पाठशाला, फरिया

हैप्पी गर्मी

ठण्डी मटकी रखो जनाब
कूलर पंखा कर लो साफ
शरीर में रखो नर्मी
मेरी तरफ से हैप्पी गर्मी।

शीतल बैरवा, 13 वर्ष, हरियाली समूह, फरिया।

गिलाउड़ी

छोटी सी गिलाउड़ी
पान खाबौ सीखगी
पइसा कोनी गोज्या मं
कार चलाबौ सीखगी।

सोनाक्षी बैरवा, कटार।

चूँ चूँ पूँ पूँ

खाट बिछागौ धरमेन्दर
जीपै आ बैठ्या बंदर
खाट बोले चूँ चूँ
बंदर पादै पूँ पूँ

सतीश माली, कक्षा-4,
समूह -सूरज, फरिया

कहानियाँ

मेट्रो का टिकट

मुझे मेट्रो में ट्रेन में बैठने की बहुत इच्छा थी। एक बार मैं और मेरे पापा किसी काम से शहर गए। फिर मैं और मेरे पापा बाजार की तरफ गए। हम पुल के नीचे से जा रहे थे। हमारे ऊपर से मेट्रो ट्रेन निकली। मेरी मेट्रो में ट्रेन में बैठने की इच्छा और बढ़ गई। मैंने पापा से कहा–'मुझे मेट्रो ट्रेन में बिठाओ।'

पापा बोले–'फिर कभी बैठेंगे।'

लेकिन मेरी मेट्रो ट्रेन में बैठने की बहुत इच्छा होने के कारण मैंने पापा से कहा–'मुझे तो मेट्रो ट्रेन में बैठना है।'

पापा बोले–'ठीक है।' हम थोडी देर में मेट्रो स्टेशन पर पहुँच गए। मैंने अंदर देखा तो मेट्रो स्टेशन बहुत बड़ा और सुंदर था। फिर हम टिकिट लेने गए। कुछ देर इंतजार करने के बाद हमें टिकिट मिल गया। मैंने मेट्रो का टिकिट देखा तो वह सिक्के के आकार का था। हमको वह सिक्का मशीन में डालना होता है। फिर पापा ने टिकिट मशीन में डाला तो उस मशीन ने रास्ता दे दिया। लेकिन मैंने उसमें टिकिट नहीं डाला। मैं पापा के साथ निकल गया। तब से वह टिकिट मेरे पास ही है।

मैंने कभी मेट्रो ट्रेन नहीं देखी है। मैं तो सोचता हूँ कभी ऐसा हो।

राहुल गुर्जर, कक्षा--7, समूह-लोटस, गिर्राजपुरा।

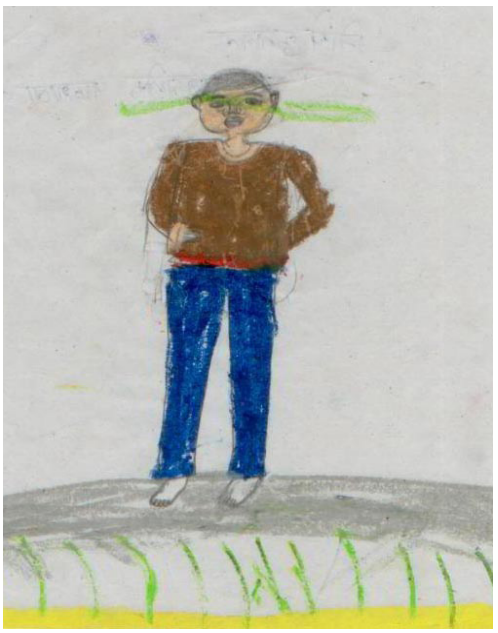

निधि कुमावत, कक्षा 3, उदय सामुदायिक पाठशाला, फरिया

चूहे

दो चूहों के बीच एक बहुत बड़ी दोस्ती थी। उनके स्कूल के रास्ते में एक गाजर का खेत पड़ता था। दोनों दोस्तों ने कुछ बात की और खेत में घुसकर गाजर खाने लगे।

उन दोनों को एक चूहे के बच्चे ने देख लिया। चूहे के बच्चे ने अपने माता–पिता को ये बात बता दी। माता–पिता चूहों ने दोनों दोस्त चूहों के माता–पिता को ये बात बता दी। और कह दिया कि इसलिए वे रोज स्कूल जाने में लेट होते हैं।

शाम को जिसने शिकायत की थी वह बच्चा चूहा और उसके माता–पिता चूहे। जिन दो दोस्त चूहों की शिकायत की थी उनके माता–पिता चूहे। सब मिलकर दोस्त चूहों के आने का इंतजार कर रहे थे। जब दोनों चूहे आए तो उनसे पूछा गया कि क्या रात में भी खेत का मालिक खेत में रहता है?

दोस्त चूहों ने कहा–'नहीं।'

तो फिर चलो उस खेत में। सारे चूहे रात में खेत में गाजर खाने गए। और वहीं सो गए।

अगले दिन से दोनों दोस्त चूहे समय पर स्कूल पहुँचने लगे।

नमन माली, कक्षा–7, हरियाली समूह, फरिया।

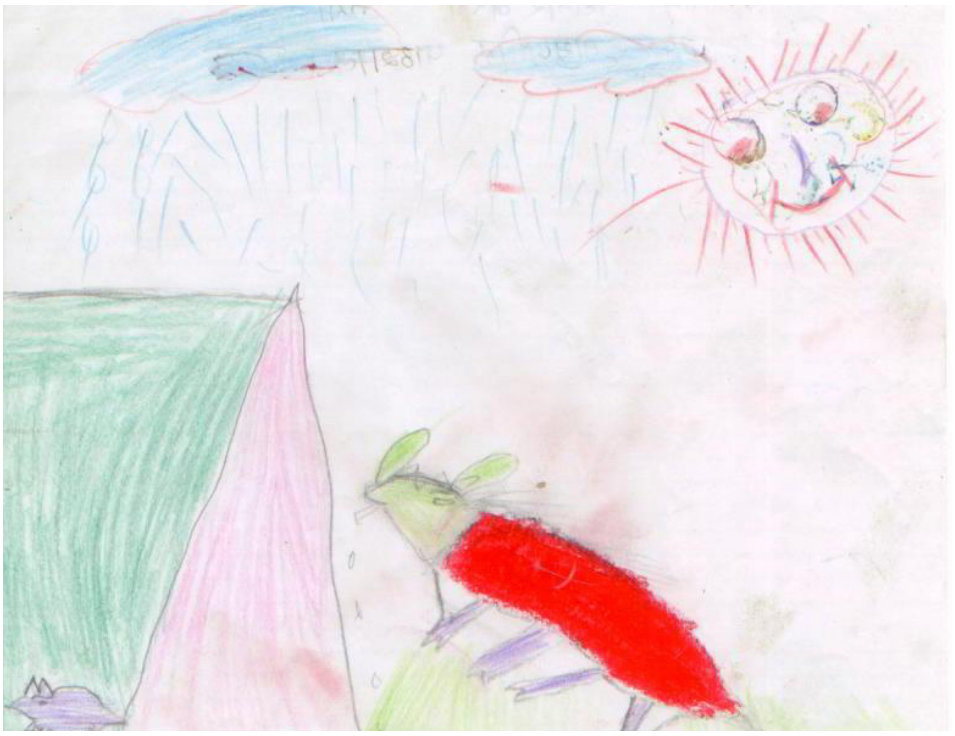

महावीर बैरवा, कक्षा 2, उदय सामुदायिक पाठशाला, फरिया

सतीश माली, कक्षा 4, उदय सामुदायिक पाठशाला, फरिया

लड़ाई

दो लड़कों में लड़ाई हो गई। उनकी लड़ाई में तीसरे को धक्का लग गया। अब वे तीनों लड़ने लगे। तीनों की लड़ाई में चौथे को धक्का लग गया तो चारों लड़ने लगे। चारों की लड़ाई में चार आदमियों को धक्का लग गया। अब वे आठों लड़ने लग गए। उनकी लड़ाई से दूसरे आठ लोगों के धक्का लग गया। अब वे सोलह लड़ने लग गए।

अब वे सब एक दूसरे गले मिल रहे थे।

शूटिंग पूरी हो गई थी।

सतीश सैनी, कक्षा–4, सूरज समूह, फरिया।

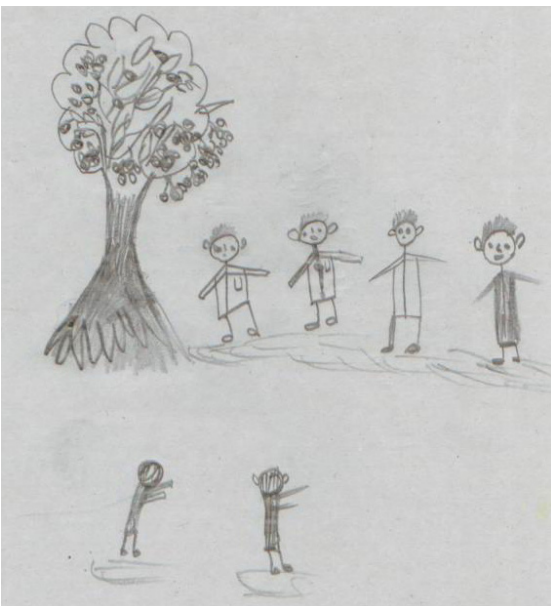

दिलखुश बैरवा, कक्षा 7, उदय सामुदायिक पाठशाला, फरिया

लड़की की पढ़ाई

एक लड़की चार बजे भोर में जागकर स्कूल के समय तक घर का काम करती थी। स्कूल जाते समय उसके भाई को टिफिन दिया जाता, पर लड़की को नहीं।
एक दिन घर में उसकी शादी कर देने की चर्चा चल रही थी। बात चल रही थी कि लड़का ठीक है। दहेज नहीं लेगा। थोड़ा गरीब है। परिवार ठीक है।
लड़की अभी पढ़ना चाह रही थी पर उसकी शादी कर दी। उसे ससुराल भेज दिया। जिस लड़के से उसकी शादी हुई, दुख के कारण उससे कुछ बोली नहीं।
एक दिन उसने लड़के से कहा–'आप बुरा न मानो तो एक बात कहूँ।' लड़की ने आगे की पढ़ाई जारी रखने की बात उससे कही।
लड़का बोला–'जहाँ से पढ़ाई छोड़ी है, वहीं से आप शुरू करो।'

प्रियंका गुर्जर, कक्षा-7, उदय सामुदायिक पाठशाला, गिर्राजपुरा।

सोनाक्षी बैरवा, कक्षा 4, उदय सामुदायिक पाठशाला, फरिया

याद की धूप छाँव में

पहले हम यहाँ रहते थे

एक बार की बात है। मैं और मेरा भाई, दादी के साथ भैंरूजी के जा रहे थे। भैंरूजी का स्थान घने जंगल के अंदर है। वहाँ जाने के लिए दो डूँगर पार करने पड़ते हैं। हम जैसे ही डूँगर में चढ़े, हमें बहुत से जानवरों की आवाज सुनाई दी। मैं और मेरा भाई बहुत डर गए। फिर मैंने दादी से कहा कि यहाँ पर तो बघेरे की आवाज आ रही है। मेरी दादी ने कहा– 'पहले हम यहीं रहते थे। तब बघेरे हमारे सामने होकर निकल जाते थे। अगर हम उन्हें नुकसान पहुँचाते हैं तो ही वे हमें नुकसान पहुँचाते हैं।'

जैसे ही हमने एक डूँगर पार किया हमें बहुत से जानवरों की हड्डियाँ दिखाई दी। हमने दूसरे डूँगर को अभी आधा ही पार किया था कि हमें एक भालू मिल गया। मेरी दादी साथ में माचिस लेकर गई थी। मैंने मेरी दादी से कहा–'मैंने सर को यह कहते सुना है कि भालू माचिस से डर जाता है।' मेरी दादी ने माचिस जलाने के लिए मना कर दिया। लेकिन मैंने दादी से जिद करके माचिस ले ली। मैं देखना चाहता था कि क्या सच में भालू डर जाता है? जैसे ही मैंने माचिस जलायी। भालू डर कर भाग गया।

फिर हम भैरूजी के पहुँच गए। हमारे भैरू जी के चारों तरफ दीवार थी। हमने वहाँ खाना खाया। फिर हम डूँगर से नीचे उतर आए। तभी मुझे याद आया कि हमारा बैग तो ऊपर ही रह गया। मेरी दादी ने कहा–'तुम दोनों भाई यहाँ रुको। मैं बैग लेकर आती हूँ।'

हम दोनों रुक गए। हम बहुत डरे हुए थे। मेरी दादी को बहुत देर हो गई थी। इससे हम और भी डर गए। तभी वहाँ पर से एक जरख गुजर रहा था। मेरे भाई के मुँह से चीख निकल गई। मैंने मेरे भाई को चुप किया। मैंने जरख को भगाने की कोशिश की तो जरख मेरी तरफ घुर्राने लगा। तभी मेरी दादी आ गई। मैंने पूछा–'आप इतनी देर में क्या आई?'

मेरी दादी ने कहा–'मेरे काँटा लग गया था इसलिए देर हो गई।

फिर हम जंगल के दोनों डूँगर पार करके गाँव आ गए।

अब कभी हम जंगल में जाते हैं तो वह दिन याद आ जाता है–'जब दादी के साथ जंगल में गए थे, जहाँ हमें भालू और जरख मिले थे।'

अभिषेक गुर्जर, कक्षा 7, उदय सामुदायिक पाठशाला, गिरजिपुरा।

प्लेटफार्म पर

कुछ समय पहले की बात है। मैं और मेरी बुआ का लड़का प्लेटफार्म पर घूमने जा रहे थे। थोड़ी देर बाद हम प्लेटफार्म पर पहुँच गए। और बेंच पर बैठ गए। हमने कुछ देर तक ऐसे ही मस्ती की। फिर हम वहाँ से वापस आने लगे। लेकिन एक झण्डी दिखाने वाले आदमी ने रोक लिया और कहा–'तुम कहाँ जा रहे थे? तुमने टिकिट कटा लिया क्या?'
मैंने कहा–'हम कहीं नहीं जा रहे। हम टिकिट क्यों कटाएँगे?'
उसने कहा–'यह क्या है?'
मैंने कहा–'प्लेटफार्म।'
तो उसने सीढ़ियों पर बैठे एक आदमी से कहा–'इन दोनों बच्चों को कमरे में बंद कर दे और कल वाले दोनों बच्चों को छोड़ दे।'
ये बात सुनकर हम घबरा गए।
तभी वहाँ एक आदमी आया। वह हमें जानता था। उसने हम दोनों को वहाँ से निकाल दिया। इसके बाद हम प्लेटफार्म पर कभी नहीं गए।

फतेह सिंह गुर्जर, कक्षा-7, समूह-लोटस, उदय सामुदायिक पाठशाला, गिरजिपुरा।

महावीर बैरवा, कक्षा 2, उदय सामुदायिक पाठशाला, फरिया

शिक्षा के ग्रामीण केन्द्र की ओर

कछुआ

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र, सवाई माधोपुर की पाठशालाओं में काम करते हुए मुझे दस साल से अधिक हो गए हैं। इन दिनों मैं उदय सामुदायिक पाठशाला फरिया में बच्चों के साथ सीखने–. सिखाने का काम कर रहा हूँ। सवाईमाधोपुर शहर से पैंतीस किलोमीटर दूर रोज फरिया जाना और फरिया से वापस आना। लगभग सत्तर किलोमीटर का सफर मुझे रोज तय करना होता है। मेरा यह सफर सुकून भरा होता है। सवाईमाधोपुर शहर से निकलते ही जंगल शुरू हो जाता है। सड़क के दोनों ओर घना जंगल और उसमें से गुजरती हुई मेरी मोटर साइकिल। ज्यादा ध्यान गाड़ी चलाने पर ही देना होता है। क्योंकि यह टोंक–शिवपुरी हाइवे भी है। बहुत से साधन बगल से गुजरते हैं। इसलिए सड़क के अगल–बगल में झाँककर ये देखने का मौका लगभग नहीं के बराबर होता है कि कौनसे वन्यजीव सड़क के दोनों ओर विचरण कर रहे हैं। कभी–कभी रोड बिल्कुल खाली भी मिलता है। और ऐसे में कोई वन्यजीव सामने ही दिख जाए जो अलग बात है। ऐसी अलग बात मेरे साथ हो चुकी है। एक बार तब जब मुझे सड़क से थोड़ी ही दूर पेड़ों के बीच खड़ा बाघ दिख गया था। और एक बार तब जब मुझे कुशालीदर्रा पार करते ही भालू दिख गया था।

पाठशाला से लौटते हुए शाम हो ही जाती है। और बोदल गाँव से आगे घने जंगल के रास्ते में पहुँचते–पहुँचते तो और भी अधिक शाम हो जाती है। ऐसी ही एक सुहानी शाम में मेरी मोटरसाइकिल अपनी रफ्तार में थी कि मुझे सड़क पर पड़ा कुछ दिखाई दिया। पहले लगा नोटों से भरा कोई बैग पड़ा है। फिर लगा कोई पत्थर पड़ा है। लेकिन जब उसे हिलते–डुलते देखा तो समझ में आया कि निर्जीव नहीं सजीव है।

मैंने मोटर साइकिल सड़क के एक ओर खड़ी की। उतर कर उसके पास जाकर देखा। वह एक बड़ा चमकीला सा कछुआ था। मैंने उसे तुरंत उठा लिया। सड़क पर कोई दुर्घटना हो सकती थी। तभी सड़क से गुजरती चार पाँच मोटर साइकिलें भी वहाँ रुक गई। यह देखने कि मुझे बीच सड़क पर आखिर ऐसा क्या मिल गया है।

लोगों ने जब देखा कि मुझे कछुआ मिला है तो तुरंत सलाह दी–'इसे घर ले जाओ।' एक दो बोले–'क्या करोगे ले जाकर। इसे छोड़ दो।'

मुझे लगा–'यहाँ तो कैसे छोड़ दूँ। पास में ही कुशालीदर्रा का तालाब है। मैं उसमें इसे छोड़ दूँगा।'

फर मैंने अपने कंधे पर लटके बैग को खोला। बैग के आगे की जेब में उसे रखा। कछुआ बहुत भारी था। बैग की चेन को थोड़ा खुला रखा ताकि उसे ऑक्सीजन मिलती रहे। फिर मैं मोटर साइकिल पर सवार होकर चल दिया। कुछ ही दूर चला तो लगा कि कहीं पीछे लटके बैग में से कछुआ बाहर निकलकर गिर गया तो? तब फिर मैंने बैग को पीछे के बजाय आगे लटका लिया।

आकांक्षा सैनी, कक्षा 5, फेलोशिप सेन्टर, अल्लापुर

कछुआ अब मेरे दिल के बहुत करीब हो गया था। मुझे लगा कि क्यों न इसे घर ही ले चलूँ। वहीं पर इसे मैं फल सब्जी, हरी घास खिला दूँगा। बाजार से इसके खाने का भोजन ला दूँगा। अपने घर की सीमेंट की टंकी में इसे रख लूँगा। यही सोचता हुआ मैं कुशालीदर्रा के तालाब के आगे निकल गया। कछुए को वहाँ नहीं छोड़कर उसे अपने घर ले गया।

घर पहुँचकर मैंने सबसे पहले जाकर कछुए पर पानी डाला। वह अपना मुँह एवं पैर हाथ निकालकर चलने लगा। फिर उसे टंकी में डाल दिया।

तभी माँ वहाँ आ गई और उसने पूछा कि सोनू यह क्या है?

मैंने सारी घटना सुना दी।

माँ ने कहा–'बेटा यह कछुआ है जो पानी एवं जमीन दोनों पर रहता है। यह कुछ पानी में रहने वाले कीड़े भी खाता है। हम अगर इसे अपने यहाँ रखेंगे तो यह भूखा रह जायेगा। यह अपना जीवन पानी में ही व्यतीत करता है।'

मैं तो सोचता था घर में शिक्षक तो मैं ही हूँ। मैंने कुछ देर काफी सोचा। समझ में आ गया कि जो प्राणी जहाँ के लिए है वह वहीं ठीक तरह से रह सकता है। मैंने वापस अपनी गाड़ी उठायी और कुशालीदर्रा तालाब पर कछुए को छोड़ने चल दिया।

कुशालीदर्रा के तालाब में कछुए को छोड़ा। वह पानी में तैरने लगा। वह खुशी से तालाब में तैर रहा था। और उसके कुछ देर बाद मैं मोटरसाइकिल पर खुशी से उड़ रहा था।

तरूण शर्मा

बात लै चीत लै

पोला डोला की बात

अेक पोलो हो और अेक डोलो हो। डोला को ब्याउ हो गियो हो और पोला कोन हीयो हो। बे दोनीं डाँग मं दूद लेबा जावा। डोला की घराळी तो उकू गैला मं लुआबा जावे ही। और पोला कै कोई नीं जावै हो। उके घराड़ी कोनी ही।

अेक दन पोलो रूँस गियो। और उकी जीजी स की कि पैली म्हारो ब्याउ करा, जद जाऊँगो दूद लेबा। उकी जीजी नं की क बेटा आज तो चल जा। तड़कै थारी घराळी लाऊँगी। फेर पोलो चल गियौ दूद लेबा।

उकी जीजी नं चून की कोठी कू घाघरा लूगड़ी पैरा दिया। फेर पोलो या सोच कै बेगो डाँग सूं आ गियो क म्हारी घराळी आगी होयगी। पोला नं उकी जीजी कन जार बूजी क 'ले आयी क म्हारा घराड़ी।'

उकी जीजी नं जी कोठी कू घाघरा लूगड़ी पैराया हा, वा बता दी क 'घर क मायां है थारी घराड़ी।'

पोलो वा कन गिया। फेर जीजी सूं आर बोल्यौ क 'जीजी या तो बोलैइ कोनी।'

उकी जीजी नं की क–'हाल नई–नई है। बोल लेगी दो चार दन मं।'

फेर अेक दन पोला कू रोस भिर्‌याया। उनं उकी घराळी क धको दे दियौ।

तो वा चून की कोठी जा पड़ी और उमें उको पैर फंसग्यौ। वा बोल्यौ क 'छोड जीजी आ री।' वा खांसू छोडैगी वा तो चून की कोठी ही। फेर वा बोल्यौ क जीजी या म्हारो पांउ नी छोड री।' फेर उकी जीजी बोली क 'छोड बेटी छोड।' अस्यां बोल के उको पांउ काड दियौ।'

फेर वा कड गियौ घरां स के जीजी लड़ैगी। फेर उकू गैला मं घोड़ी हाड़ो मिल्यौं। जे उनं की क घोड़ी हाड़ा मोकू चलाबा दै।

घोड़ी हाड़ो बोल्यौ क 'थारो नांव कांई है?' उन कियो क म्हारो नांव तो घोड़ी हाड़ो है।' या बोल के घोड़ी कू लेर भाग गियो।

फेर वा कपड़ा की दूकान पै गियौ। कपड़ा हाड़ा से कपड़ा लिया। नांव भरभूळ्यौ बतार निकड़ गियो।

फेर आगै अेक छोरी और अेक डोकरी मली। वा छोरी बोली क जीजी म्हारा पांउ दूख रिया जे मोकू घोड़ी पै बैठाण दै।

डोकरी नं छोरी कू उकी घोड़ी प बिठाण दी।

फेर डोकरी नं घोड़ी हाड़ा सूं बूजी क थारो नांव कांई है। वानं कियो क म्हारो नांव तो जुँवाई है। अस्यां खैर अगाड़ी कड गियौ।

फेर जीकी घोड़ी ही वा थाणा मं गियौ और बोल्यो क 'साब म्हारी घोड़ी कू घोड़ी हाड़ो ले गियौ।' तो पुलिस हाड़ा नं उकू भगा दियौ क घोड़ी हाड़ो नीं लेर जावैगौ तो कौंण लेर जावैगौ। भाग अटी सूं।'

फेर दूकान हाड़ो थाणा मं गियौ क 'साब म्हारा कपड़ा चोरी हो गिया।'

थाणादार नं बूजी क कौण ले गया।

तो उनं की क 'साब भरभूळ्यो ले गियौ।'

थाणांदार नं उकू भगा दियौ क 'भरभूळ्यो ले गियो तो कटी झाड़ खेतन मं जार हेर। न्ह्यां कांई लेबा आयौ।'

फेर वा डोकरी थाणां मं गई और बोली क साब म्हारी छोरी कू जुंवाई ले गियौ।'

तो थाणांदार बोल्यौ क मायी जुवांई नीं लेर जावैगौ तो कौण लेर जावैगौ। न्ह्या कामी आयी। जा न्ह्यांन से।

प्रस्तुति – रीना गुर्जर, बेरना।

कृष्णा नायक, कक्षा 4, उदय सामुदायिक पाठशाला, फरिया

म्हारी मम्मी

म्हारी मम्मी मोसूं हर छोटी छोटी बात पै लड़ती रेवे। मोकू खेलवा जाणौं हो तो लड़ै। मोकू स्कूल नीं जाणौं हो तो लड़ै। मैं स्कूल को काम नीं करूँ तो लड़ै। म्हारी मम्मी म्हारी समज सूं तो बिल्कुल ब्हार छै।

अेक बार रात आँगण में खाट बछार, मैं म्हारी मम्मी के पास ही सो रियो हो। म्हारी नींद खुलगी। फेर मैंनं खूब सोवा की कोसीस करी। पर मोकू नींद ही नहीं आयी। फेर मैं ब्हार जार केनी बैठ गियो। ब्हार जोर–जोर सूं हवा चल री ही। वा हवा मं अेक भूत म्हारै आडी आ रियो हीयो। पैली तो मैं डरप गियो। फेर मैं बोल्यो–'कॉंई है? कामी आ रीयो म्हारै आडी?'

फेर वा म्हारा कान मं आर केनी बोल्यो–'तूने म्हारी भूतनी कू देखी है क? वा कहीं गुम गी।'

मैंने पूछी –'किसी लगै है वा?'

उनं कियो–'गौरी है। लम्बा–लम्बा बाळ हेवै वाका। और वा बालकन कू हैरान करै।'

फेर मैनं पूछ्यो वासे –'कतना दन हो गया उकू गुम्या।'

भूत नं कियो–'तेरै चौदह साल हो गिया।'

मैनं ऊ से कियो कि –'अतना दन को खां मर गियो हीयो तू। वा तो म्हारै आँगण मं खाट मं सो री।'

भूत भाग्यो–भाग्यो गियो। और आँगण मं खाट क पास जार केनी खड़ो हे गियो। कणैं किस्यां म्हारी मम्मी की आँख खुलगी। वानं वा से पूछी –'कुण है रे तू?'

उनं खी–'मैं भूत हूँ।'

म्हारी मम्मी वा की खबर लेबा लागी–'अरै तो निकम्मा अठी कॉंई कर रियो है। खेत में गउं का पूळा भकर्‌या पड़्या छै। जार सकेल सकेल क्यूं नं वानं। काल थरेसर आ जावैगी। जब थरेसर मं गाड़ा देवा को काम करज्यो।'

भूत नं की–'ठीक च काकी।' अस्यां के र भाग गीयो वा तो व्हां सूं।

फेर मैं जार चुपचाप सो गियो। म्हारी मम्मी कै सामनं तो भूत की बी अेक नं चालै।

कविता बैरवा, फेलो, बोदल।

बतरस

पत्र

1

प्रिय कटोरी,

जब भी मुझे भूख लगती है। मैं तुम्हें यहाँ वहाँ ढूँढता फिरता हूँ। मुझे तुम पर कभी–कभी गुस्सा भी आता है। जब तुम नहीं मिलती हो, खासतौर से तब जब सब्जी पतली हो। हमारा साथ बना रहे इसके लिए जरूरी है कि तुम निश्चित जगह पर मिल ही जाया करो। जब मैं तुममें सब्जी, दाल, रायता, खीर भर–भरकर पीता हूँ। पेट भरता है, दिल खुश हो जाता है। लेकिन जब तुम्हें साफ करना पड़ता है तो मुझे रोना आता है। क्या ऐसा नहीं हो सकता कि तुम अपने आप ही साफ हो जाया करो।

मैंने देखा है पिछले एक सप्ताह में तुम मेरे हाथ से तीन बार छुटक गई हो। इस तरह मैं देख रहा हूँ कि आजकल तुम कुछ ज्यादा ही भाव खाने लगी हो। ज्यादा मत इतराया करो। क्योंकि मैं तुम्हें छोड़ भी सकता हूँ। बाजार में प्लास्टिक के भी दोने थाली आ गए हैं। जो काफी अच्छे हैं। हाथ से छुटकते भी नहीं है। इसलिए जैसे ही खाना बने सब्जी, खीर, रायता लेने के लिए तैयार रहा करो।

आशा है मेरी बातों पर गौर करोगी और ठीक से कार्य करोगी।

तुम्हारा प्रिय
प्रेमचंद

2

मेरी प्यारी चप्पल,

तुम सच में बहुत प्यारी हो। हर कदम पर मेरे साथ खड़ी रहती हो। तुमने मुझे धूप में जलने से बचाया है। जब भी कभी मुझे काँटों भरे रास्ते से गुजरना पड़ा, तब तुमने ही मेरा साथ दिया है। तुम खुद काँटों का दर्द झेलती हरी लेकिन मुझे उस दर्द से बचाया। लेकिन आज तुम मेरे पास नहीं हो और आज मैं तुम्हें बहुत याद कर रही हूँ। उम्मीद करती हूँ यह पत्र पढ़कर तुम मेरे पास दौड़ी चली आओगी। मेरे पाँवों के पास जो तुम्हें सिर आँखों पर बिठाते हैं। और जिनके लिए तुम बिछ बिछ जाती हो।

तुम्हारी प्यारी दोस्त
कविता

भाषा की सहेलियाँ, बूझो यार पहेलियाँ

1
ऐ सखी मैं भारी भोरी
हाथ लगाते ही हो गई चोरी
पूछेगी तो क्या कहूँगी
माँगेगी तो क्या देऊँगी।

2
एक सखी दो लँहगा पहने
छह लटकवै नाड़ा
चोटी ऊपर फोंन्दौ राखै
देख तमासा म्हारा।

3
नेता रे नेता
कौनसी गली में रहता
ढाकणी का पाणी पीता
पत्ता तड़ै रहता।

4
पहले खम्भो, जिके ऊपर खोठो
खोठा के ऊपर आळ्यौ
ऊ के उपर टिम टिम
टिम टिम के ऊपर टीलो
टीला के ऊपर काळी भैंस चरे।

मोहित बैरवा, कक्षा 3, उदय सामुदायिक पाठशाला, फरिया

5
सीदी सड़क बीच मं कड़क
चार इलायची एक अदरक।

(ये पहेलियाँ उदय किरण कार्यक्रम के फेलोज की वर्कशॉप में संकलित की गई।)

हीहीही–ठीठीठी

1

सोहन – पैंट की सिलाई कितनी है।

टेलर – दो सौ रुपये।

सोहन – और नेकर की?

टेलर– पचास रुपये।

सोहन – तो नेकर सिल दो। लम्बाई पैरों तक कर देना।

2

शिक्षक – अस्पताल में ऑरेशन से पहले डॉक्टर मरीज को बेहोश क्यों करते हैं?

छात्र– अगर बेहोश नहीं किया और मरीज ऑपरेशन करना सीख गया तो डॉक्टरों को कौन पूछेगा।

गतिविधि : मोरंगे के स्तभ्भ 'बतरस' के लिए पत्र लिखकर भेजिए।

आपने इस अंक में दो पत्र पढ़े हैं। एक पत्र कटोरी को और दूसरा चप्पल को लिखा गया है। कटोरी को पत्र एक पुरूष द्वारा लिखा गया है। कोई स्त्री कटोरी को पत्र लिखती तो वह कैसा होता? आप इस पत्र के जवाब में भी पत्र लिखकर मोरंगे को भेज सकते हैं।
आप चप्पल को लिखे पत्र का जवाब भी लिखकर भेज सकते है।
या इस तरह के किसी भी विषय पर पत्र लिखकर भेज सकते है।
आपके पत्रों का मोरंगे को इंतजार रहेगा।

पहेलियों के जवाब

1. ओला 2. ताखड़ी 3. बैंगन 4. जुआ 5. हाथ।